

विचार बिन्दु

बिना मांगे किसी को उपदेश ना दो। –जर्मन कहावत

अतिक्रमण के विरुद्ध और अमानवीयता के भी!

जयपुर के एक इलाके में इन दिनों बुलडोजरों की आवाज सुनाई दे रही है। न्यू सांगानेर रोड पर गुर्जर की थड़ी से सोडाला के बीच जयपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) ने अतिक्रमण हटाने को कार्रवाई शुरू की है। राजस्थान उच्च न्यायालय के निर्देश पर हो रही इस कार्रवाई में सड़क की सीमा में आए निर्माणों को हटया जा रहा है। 250 से अधिक घरों और दुकानों को नोटिस दिए जाने और उन्हें ख़िन्त किए जाने की खबर है। पहले चरण में दुकानों के आगे बने बड़े हुए हिस्सों, सीड्रियों, शेड और दूसरे अतिक्रमणों को हटया गया है। बताया गया है कि न्यू सांगानेर रोड की निर्धारित चौड़ाई 100 फीट है, लेकिन अनेक जगहों पर अतिक्रमण और अनधिकृत निर्माण के कारण वह 40 से 60 फीट तक रह गई है। जाहिर है, ऐसी स्थिति में यातायात प्रभावित होगा और सड़क पर चलने वाले लोगों को परेशानी होगी। प्रथम दृष्टया इसमें आपत्ति की कोई गुंजाइश नहीं दिखाई देती। सार्वजनिक रास्ते सार्वजनिक ही रहने चाहिए। जिस संपत्ति पर हमारा वैध अधिकार न हो, उस पर से हमारा अनुचित और अवैध नियंत्रण ख़त्म होना ही चाहिए। मै भी यही चाहता हूं।

लेकिन बात इतनी भी सरल नहीं है। मुझे यह भी पूछने की ज़रूरत लगती है कि क्या अतिक्रमण के विरुद्ध होने के किए अमानवीय होना ज़रूरी है? क्या बुलडोजर ही अब हर समस्या का हल बच रहा है? मेरा उत्तर भी साफ है–नहीं। कानून का पालन होना चाहिए, लेकिन कानून लागू करने का तरीका भी न्यायपूर्ण और मानवीय होना चाहिए। यही वह बात है जो इस समय जयपुर की इस कार्रवाई को देखते हुए मुझे परेशान कर रही है।

उच्च न्यायालय ने आगस्त में जेडीएको न्यू सांगानेर रोड के सोडाला से गुर्जर की थड़ी वाले हिस्से से अतिक्रमण हटाने के लिए दो महीने का समय दिया था। अदालत ने 6 अक्टूबर तक अनुपालन रिपोर्ट मांगी थी। जेडीए ने अदालत को बताया कि सड़क की सर्वेक्षण और सीमांकन की प्रक्रिया के बाद कार्रवाई शुरू की गई है। 6 अक्टूबर को उसने यह भी बताया कि लगभग 700 मीटर हिस्सा साफ किया जा चुका है और शेष काम के लिए चार सप्ताह और चाहिए।

अर्थात मामला अचानक पैदा हुआ नहीं है। इस सड़क की स्थिति, अतिक्रमण और सड़क की चौड़ाई को लेकर मामला काफी समय से न्यायालय के सामने है। जेडीए को भी यह सब ज्ञात ही होगा। इसलिए सवाल केवल यह नहीं है कि अतिक्रमण हटया जाए या नहीं। सवाल यह भी है कि अतिक्रमण पैदा कैसे हुआ और इतने वर्षों तक बना कैसे रहा? यही वह प्रश्न है जिससे हम अक्सर बच निकलते हैं। कोई दुकान एक रात में फुटपाथ पर नहीं उग आती। कोई बरामदा, सीढ़ी या निर्माण अचानक सड़क की सीमा में नहीं पहुंच जाता। निर्माण धीरे–धीरे होता है, लोग उसमें पैसा लगाते हैं। कारोबार शुरू होता है। परिवार उससे अपनी रोजी–रोटी चलाने लगते हैं। कई बार वहां रहने वालों की एक पूरी पीढ़ी बूढ़ी जाती है। फिर यकायक एक दिन उन्हें बताया जाता है कि यह निर्माण अतिक्रमण है और इसे हटाना होगा। कानून की दृष्टि से यह बात सही हो सकती है। लेकिन जीवन की दृष्टि से कहानी इतनी भी सरल नहीं होती।

और यही एक सवाल और भी उठता है। अतिक्रमण तो हर जगह अतिक्रमण ही होता है। पूरे जयपुर शहर में क्या और कहीं अतिक्रमण नहीं है? प्रांत और राज्य के किसी भी कस्बे या शहर में देख लें, हर जगह अतिक्रमण ही अतिक्रमण नज़र आरहे। उनको लेकर हमारा संज़रिया क्या है? क्या उन्हें हटाने के लिए भी कुछ किया जा रहा है? या इस बात का इंतज़ार है कि कोई उच्च न्यायालय कभी हुकूम दे तो कुछ किया जाए! तब तक जो चर्चता है चलता है! भले ही पीडियां गुज़र जाएं फिर अचानक एक दिन हम जागेंगे और बुलडोजर लेकर पहुंच जाएंगे। क्या यह बात तर्क संगत और न्याय पूर्ण लगती है?

यदि ये अतिक्रमण इतने स्पष्ट थे तो इतने वर्षों तक क्या हो रहा था? आज जिस जगह को अवैध बताया जा रहा है, वहां कल तक कारोबार कैसे चलता रहा? यदि किसी व्यक्ति ने नियम तोड़ा है तो वह दोषी है। लेकिन यदि शासन-व्यवस्था ने उस उल्लंघन को वर्षों तक होते और बढ़ते देखा है, तो क्या उस व्यवस्था की कोई जिम्मेदारी नहीं है?

अधिकार को समाप्त नहीं करता। उसके साथ सम्मान से बात की जा सकती है। उसकी आपत्ति सुनी जा सकती है। उसे पर्याप्त समय दिया जा सकता है। सीमांकन पर विवाद हो तो उसे स्पष्ट किया जा सकता है। जहां संभव हो, वैकल्पिक व्यवस्था पर विचार किया जा सकता है। यह सब करना कानून के विरुद्ध नहीं है। बल्कि मेरे विचार में यह कानून को अधिक मानवीय ढंग से लागू करना है।

इस मामले में एक और बात सामने आई है जो और भी महत्वपूर्ण है। कुछ स्थानीय लोगों और जनप्रतिनिधियों ने कार्रवाई में की गई मार्किंग पर सवाल उठाए हैं। उनका आरोप है कि कुछ जगहों पर सीमांकन सही नहीं हुआ है और ऐसे निर्माण भी कार्रवाई की सीमा में आ गए हैं जिनके बारे में विवाद है। इन आरोपों की अंतिम सत्यता संबंधित संस्थाओं को ही स्पष्ट करनी होगी। लेकिन जहां ऐसी आपत्तियां उठ रही हों, वहां प्रशासन के लिए उन्हें सुनना और स्पष्ट करना क्या नामुमकिन है? आखिर बुलडोजर चलाने से पहले एक बार नाप लेना और यह सुनिश्चित करना कि किसी के साथ अन्याय न हो, कोई बहुत बड़ी प्रशासनिक मांग तो नहीं है। और यदि कोई निर्माण सचमुच सड़क की सीमा में आता है, तो उसे हटाना जाना चाहिए। इसमें कोई दो राय नहीं।

लेकिन यहां मैं प्रशासन से एक प्रश्न करना चाहता हूँ–यदि ये अतिक्रमण इतने स्पष्ट थे तो इतने वर्षों तक क्या हो रहा था? आज जिस जगह को अवैध बताया जा रहा है, वहां कल तक कारोबार कैसे चलता रहा? निर्माण होते समय उस पर किसकी नजर थी? नक्शे और मास्टर प्लान किसलिए हैं? अतिक्रमण होने से रोकना प्रशासन की जिम्मेदारी है या केवल उसे वर्षों बाद गिराना ही उसकी जिम्मेदारी है? यदि किसी व्यक्ति ने नियम तोड़ा है तो वह दोषी है। लेकिन यदि शासन–व्यवस्था ने उस उल्लंघन को वर्षों तक होते और बढ़ते देखा है, तो क्या उस व्यवस्था की कोई जिम्मेदारी नहीं है?

यह सवाल अतिक्रमण का समर्थन नहीं करता। यह प्रशासनिक जवाबदेही का सवाल है।

अपने ने तो आदत ही बना ली है कि हम बीमारी का इलाज तब करते हैं जब वह गंभीर हो चुकी होती है। अतिक्रमण शुरू होते ही उसे रोकना कठिन लगता है; वर्षों बाद बुलडोजर भेजना आसान लगता है। पहले आंखें बंद कर लेना और फिर अचानक आंखें खोलकर कठोर कार्रवाई कर देना किसी भी स्वस्थ प्रशासन की निशानी तो नहीं हो सकती। अतिक्रमण–मुक्त जयपुर चाहिए तो हमें केवल पुराने अतिक्रमण नहीं हटाने होंगे। हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा किनए अतिक्रमण पैदा ही न हों। क्या इस दिशा में भी हम कुछ कर रहे हैं? करेंगे?

इसके लिए नियम सबके लिए समान होने चाहिए। प्रभावशाली व्यक्ति हो या सामान्य दुकानदार, किसी को सार्वजनिक भूमि पर कब्जा करने की ख़ूट नहीं मिलनी चाहिए। लेकिन इसी के साथ प्रशासन को भी अपनी भूमिका निभानी होगी। उसे समय रहते कार्रवाई करनी होगी। उसे सक्ष सीमांकन करना होगा। उसे नागरिकों को सुनना होगा। और जहां किसी कार्रवाई से किसी परिवार की रोजी–रोटी या आवास प्रभावित हो रहा हो, वहां मानवीय विकल्पों पर भी विचार करना होगा। किसी शहर को व्यवस्थित करने के लिए कठोरता की ज़रूरत होती है। लेकिन कठोरता और क्रूरता एक ही चीज नहीं हैं। यह अंतर हमें समझना होगा।

मैं नहीं चाहता कि जयपुर को या कहीं की भी सड़कें अतिक्रमण से भरी रहें। मैं चाहता हूं कि सड़कें अपनी निर्धारित चौड़ाई में हों। मैं चाहता हूं कि फुटपाथ पैदल चलने वालों के लिए हों। मैं चाहता हूं कि सार्वजनिक जमीन पर किसी का निजी कब्जा न हो। लेकिन मैं यह भी चाहता हूं कि यह सब करते हुए हमारा शहर अपने नागरिकों के प्रति सवेदनशून्य न हो जाए। किसी सड़क को चौड़ा करना उलाल्खि हो सकती है। किसी शहर को अतिक्रमण–मुक्त करना भी उपलब्धि हो सकती है। लेकिन यदि उस उपलब्धि के रास्ते में ऐसे परिवार खड़े हों जो अपने जीवन की जमा–पूंजी को बोरियों में भरकर दूसरी जगह ले जाने को मजबूर हों, तो हमें कम–से–कम एक क्षण रुककर यह ज़रूर पूछना चाहिए कि क्या इससे बेहतर तरीका नहीं हो सकता था?

क्योंकि शहर केवल सड़क, फुटपाथ, भवन और मास्टर प्लान का नाम नहीं है। शहर उन लोगों का भी नाम है जो उसकी सड़कों के किनारे अपनी ज़िंदगी बिताते हैं। अतिक्रमण हटाइए। ज़रूर हटाइए।

लेकिन ऐसा करते हुए यह मत भूलिए कि कानून का सबसे बड़ा उद्देश्य केवल जमीन को खाली कराना नहीं, मनुष्य के लिए एक न्यायपूर्ण और बेहतर समाज बनाना है।

अतिक्रमण के विरुद्ध होना ज़रूरी है। लेकिन अमानवीयता के विरुद्ध होना भी उतना ही ज़रूरी है। पुनश्च: यह लिखते हुए समाचार मिला है कि जेडीए ने फिलहाल हाईकोर्ट में 14 अक्टोबर 26 को होने वाली सुनवाई तक अपनी कार्रवाई रोक दी है।

–**अतिथि संपादक, डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, (शिक्षाविद और साहित्यकार)**



डॉ. जे. के. गर्ग

निर्विवाद रूप से किसी भी राष्ट्र या समाज एवं परिवार को उन्नत विकसित और कल्याणकारी बनाने के लिये उसके आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तम्भों का मजबूत होना अति आवश्यक है । इन चारों स्तंभों को दृढ़ करके ही राष्ट्र को प्रगतिशील एवं विकसित देश बनाया जा सकता है ।लगभग 5141वर्ष पूर्व महाराजा अठासेनजी इन्हीं चार स्तंभों को मजबूत कर समदृशाली, कल्याणकारी समाजवादी एवं शक्तिशाली राज्य का निर्माण करने में सफल हुए थे । अग्रसेन एक पौराणिक कर्मयोगी लोकनायक होने के साथ साथ अहिंसा और समाजवाद के प्रणेता तपस्वी धर्म परायण दानवीर युग पुरुष थे जिनका जन्म द्वार युग के अंत वह कलयुग के प्रारंभ में लगभग 5141 वर्ष पूर्व अश्विनशुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रताप नगर के सूर्यवंशी राजा वल्लभसेन के यहाँ हुआ था उनकी माताजी का नाम भगवतीदेवी था। प्रतापनगर राजस्थान में हरियाणा राज्य के बीच सरस्वती नदी के किनारे स्थित हुआ करता था ।

ऐसा भी कहा जाता है कि महाराजा अग्रसेन भगवान श्रीराम के पुत्र कुश की 34वीं पीढ़ी के थे । इस मान्यता के मुताबिक अग्रवंशी भगवान राम के वंशस होते हैं । कहा जाता है कि महाभारत के दसवें दिन राजा वल्लभसेन वीर गति को प्राप्त हो गये थे ।पन्द्रह वर्ष की अल्प आयु मे ही अग्रसेनजी ने महाभारत के धर्मयुद्ध में पांडवों की तरफ से भाग लिया था। भगवान श्रीकृष्ण भी उनकी बुद्धिमता, शौर्य, परक्रम, समझबूझ से अत्यंत प्रभावित हुए थे और उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि युवा अग्रसेन भविष्य में एक पराक्रमी सम्राट एवं युग पुरुष होंगे ।

विवाह– युवा अग्रसेन ने सपों के राजा नागराज की बेटी राजकुमारी माधवी के स्वयंवर में अनेकों राजाओं, राजकुमारों और स्वर्ग के सम्राट इंद्रदेव में पांडवों की तरफ से भाग लिया था । इंद्र देवता राजकुमारी माधवी की सुंदरता पर मोहित थे इसलिए एन केन प्रकारेण राजकुमारी माधवी से विवाह करना चाहते थे।स्वयंवर में राजकुमारी माधवी



प्रोफेसर अशोक कुमार प्राफसर कुमार राजकाय महाविद्यालय में समाजशास्त्र के प्राध्यापक थे।नए-नए आपसे, इसलिए सीने में उसूलों की धडकन अभी तेज थी। उन्हें लगता था कि शिक्षक का काम केवल तनख्वाह उठाना नहीं, बल्कि उस कक्ष में बैठकर देश की नई पीढ़ी की रोड़ मजबूत करना है। समस्या बस एक थी-कक्षा में कुर्सियाँ अक्सर खाली मिलती थीं। शहर के कोचिंग संस्थानों के चमकीले विज्ञापनों और प्रतियोगी परीक्षाओं के भारी दबाव ने डिग्री कॉलेजों को केवल परीक्षा केंद्र बनाकर छोड़ दिया था। साठ नामांकित विद्यार्थियों में से बमुश्किल आठ या दस ही कभी-कभार नजर आते। प्रोफेसर कुमार रोज पूरी तैयारी के साथ जाते, श्यामपट्ट पर चॉक से

अलवर। नवरात्र के पहले दिन के साथ ही अलवर की पहाड़ियों पर स्थित करणी माता मंदिर मेले की शुरुआत हो गई है। सुबह से ही माता के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ने लगी। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री संजय शर्मा भी सुबह मंदिर पहुंचे। उन्होंने विधिवत पूजा-अर्चना कर माता के दर्शन किए ।

ने राजकुमार अग्रसेन का चयन कर उनका वरण किया। अग्रसेन माधवी के विवाह से दो विभिन्न संस्कृतियों एवं परिवारों का मिलन हुआ क्योंकि राजकुमार अग्रसेन जहाँ एक सूर्यवंशी थे वहीं राजकुमारी माधवी एक नागवंशी थी । राजकुमारी माधवी का विवाह अग्रसेन जी के साथ हो जाने से इंद्रदेव ने अपने आप को अपमानित महसूस किया और वे ईर्ष्या प्रस्त होकर बहुत क्रोधित हुए और इंद्र ने प्रताप नगर के निर्दोष स्त्री-पुरुषों,बालक-बालिकाओं को प्रताडित करने हेतु प्रताप नगर पर कई वर्षों तक बारिश नहीं होने दी जिससे प्रताप नगर में भयानक अकाल पड़ गया। सम्राट अग्रसेन ने अपनी प्रजा एवं प्रताप नगर की सुरक्षा और राजवंश के पालनार्थ इंद्र के खिलाफ धर्मयुद्ध प्रारम्भ कर दिया । युद्ध में इंद्र की पराजय हुई। पराजित इंद्र ने नारदमुनि से अनूनय-विनय कर उनकी सम्राट अग्रसेन से सुलह कराने का निवेदन किया। नारद मुनि ने दोनों के बीच में मध्यस्थता करके सुलह करा दी ।

समाजवाद के प्रेरणता– महाराजा अग्रसेन जी के राज्य में यह परंपरा थी कि जो भी व्यक्ति या परिवार उनके राज्य में आकर बसता था, अग्रोहा के सभी निवासी नवागंतुक नागरिक को सम्मान और स्वास्ति के रूप में एक रुपया और एक ईंट भेंट करते थे। कहा जाता है कि उस समय अग्रोहा में लगभग एक लाख से अधिक परिवार बसते थे। इस प्रकार उनके राज्य में आने वाला हर नागरिक एक लाख रुपये तथा एक लाख ईंटों का स्वामी बन जाता था। इन रुपयों से वह अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर लेता था वहीं ईंटों से अपना खुद का मकान बना लेता था। यही परंपरा समाजवाद की ही मिसाल है निःसंदेह अग्रसेन जी ने विश्व में सबसे पहले समाजवादी राष्ट्र की स्थापना की थी।

पशु बलि बंद करने वाले प्रथम सम्राट कुलेवंदी माता लक्ष्मी की कृपा से भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र हुये। राजकुमार विष्णु उनमें सबसे बड़े थे। महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। उन दिने यज्ञ में पशुबलि दी जाती थी। इस समय 18वें यज्ञ में जीवित पशुओं की बलि देने की तैयारी की जा रही थी उस वक़्त एक घोड़ा बली के लिए लाया गया। महाराज अग्रसेन ने देखा कि घोड़े की निरीह आँखों से अविरल आंसू बह रहे थे और वो निरीह पशु यज्ञ की वेदी से दूर जाने और वहां से भागने को कोशिश कर रहा था । इस दृश्य को देख कर महाराज अग्रसेन का दिल दया से भर गया और वे आहत भी हुए । उन्होंने सोचा कि ये कैसा यज्ञ है जिसमें हम कर्म जानवरों की बलि चढ़ाते हैं ? महाराजा अग्रसेन ने पशु वध को बंद करने के लिये अपने मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श किया और अपने मंत्रिमंडल के विचारों के विपरीत जाकर

पशु बलि बंद करने वाले प्रथम सम्राट कुलेवंदी माता लक्ष्मी की कृपा से भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र हुये। राजकुमार विष्णु उनमें सबसे बड़े थे। महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। उन दिने यज्ञ में पशुबलि दी जाती थी। इस समय 18वें यज्ञ में जीवित पशुओं की बलि देने की तैयारी की जा रही थी उस वक़्त एक घोड़ा बली के लिए लाया गया। महाराज अग्रसेन ने देखा कि घोड़े की निरीह आँखों से अविरल आंसू बह रहे थे और वो निरीह पशु यज्ञ की वेदी से दूर जाने और वहां से भागने को कोशिश कर रहा था । इस दृश्य को देख कर महाराज अग्रसेन का दिल दया से भर गया और वे आहत भी हुए । उन्होंने सोचा कि ये कैसा यज्ञ है जिसमें हम कर्म जानवरों की बलि चढ़ाते हैं ? महाराजा अग्रसेन ने पशु वध को बंद करने के लिये अपने मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श किया और अपने मंत्रिमंडल के विचारों के विपरीत जाकर

अग्रोहा शहर का जन्म– देवी महा लक्ष्मी से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद राजा अग्रसेन ने नए राज्य की स्थापना एवं उस राज्य की राजधानी के चयन हेतु रानी माधवी के साथ भारत का भ्रमण किया, अपनी यात्रा के दौरान वे एक जगह रुके जहाँ उन्होंने देखा कि कुछ

लिखते ,उन दस छात्रों को भी पूरी शिद्दत से पढ़ाते ,और अंत में हाजिरी रजिस्टर खोलकर केवल उन्हीं के नाम के आगे दर्ज करते जो वास्तव में सामने बैठे थे। एक दिन अचानक चपरासी हांफता हुआ आया, “प्रोफेसर कुमार, प्राचार्य साबब ने तुरंत अपने कक्ष में बुलाया है। रजिस्टर भी साथ ले जाने को कहा है।”

प्रोफेसर कुमार को लगा शायद पाठ्यक्रम या किसी नए सेमिनार पर चर्चा होगी। वे आत्मविश्वास के साथ प्राचार्य कक्ष में दाखिल हुए। प्राचार्य जी अपनी घूमती हुई कुर्सी पर टिके थे। मेज पर चारों प्राध्यापकों के उपस्थिति रजिस्टर खुले पड़े थे। प्राचार्य जी के माथे पर गहरी शिकन थी। उन्होंने चश्मा नाक पर टिकाते हुए प्रोफेसर कुमार को देखा और बिना किसी भूमिका के बोले, “प्रोफेसर कुमार जी, कॉलेज में चार विभाग हैं। देखिए, बाकी तीनों विभागों के रजिस्ट्ररों में छात्रों की उपस्थिति निन्यान्वे से सौ प्रतिशत के बीच है। और आपके रजिस्टर में? केवल पंद्रह प्रतिशत! यह क्या मजाक है?”

“सर, मैं तो बस वही लिखता हूँ जो सच है,” प्रोफेसर कुमार ने शालीनता से कहा। “कलास में लडके आते ही नहीं। सब कोचिंग सेंटरों में व्यस्त रहते हैं।” प्राचार्य जी का चेहरा सख्त हो गया। उन्होंने अपनी आवाज को थोड़ा भारी करते हुए कहा, “लडके क्यों नहीं आते प्रोफेसर कुमार? इसका सीधा मतलब यह निकलता है कि या तो आप पढ़ाते अच्छा नहीं हैं, या फिर आपको अपने विषय का ज्ञान नहीं है। देखिए, बाकी तीनों शिक्षक कितने लोकप्रिय हैं! उनकी कक्षाएं पूरी भरी रहती हैं। अगर छात्र आपको कक्षा का बहिष्कार कर रहे हैं, तो कमी तंत्र में नहीं, आपमें है।” प्रोफेसर कुमार अवाक रह गए। “लेकिन सर, वास्तविकता तो यह है कि-.....”

“मुझे वास्तविकता की ध्योरी मत पड़ाइए।” प्राचार्य जी ने बात बीच में ही काट दी। “फाइलें ऊपर जाली हैं। उच्च शिक्षा निदेशालय से कभी भी ऑडिट टीम आ सकती है। आपके पंद्रह प्रतिशत की वजह से पूरा कॉलेज कटघरे में खड़ा होगा। अगर आप अपनी कक्षाएं नहीं चला पा रहे, तो मुझे आपको वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में लिखना पड़ेगा।

आप अध्ययन कार्य में असमर्थ हैं। फिर सेवा पुस्तिका पर लाल स्याही लगेगी, प्रमोशन स्केगा और दूरराज के किसी इलाके में तबादला भी हो सकता है। अब आप खुद सोच लीजिए।”

उन्हें समझाया कि अहिंसा कभी भी कमजोरी नहीं होती है बल्कि अहिंसा तो एक दूसरे के प्रति प्रेम और अपनापन जगाती है। महाराजा अग्रसेन ने तुरंत प्रभाव से मुनादी करवा दी की उनकेराज्य मे कभी भी कोई हिंसा और जानवरों की हत्या नहीं होगी । अग्रसेन जी अहिंसा परमो धर्म का संदेश देने वाले प्रथम महाराजा बन अहिंसा का संदेश उन्होंने भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के अहिंसा के संदेश से 2500 साल पहले दे दिया था ।

शासन व्यवस्था–भगवान अग्रसेन ने एक तांत्रिक शासन प्रणाली के स्थान पर एक नयी प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था को जन्म दिया अग्रसेन जी ने वैदिक सनातन एवं संस्कृति की मूल मान्यताओं को लागू कर राज्य के पुनर्गठन में कृषि व्यापार उद्योग ,गौ पालन के विकास के साथ–साथ नैतिक मूल्यों की पुन: प्रतिष्ठा का बीड़ा उठाया। महाराजा अग्रसेन जी पहले शासक थे जिन्होंने सहकरारिता के आदर्श को समाजिक जीवन में प्रतिस्थापित किया। उन्होंने जीवन के सुख सुविधाओं एवं भोग विलास आदि पर धन के अपव्यय के स्थान पर जीवन में सादगी, सरलता और मितव्ययिता बरतने पर जोर दिया। अग्रसेन के मतानुसार व्यक्ति को अपनी उर्पाजित आय को चार भागों में बांट कर एक भाग का उपयोग परिवार के संचालन हेतु, दूसरे भाग का उपयोग उद्योग व्यवसाय या जीविका चलाने हेतु, तीसरे भाग का उपयोग सार्वजनिक कार्यों तथा चौथे भाग का उपयोग बचत कर राष्ट्र की समृद्धि में करना चाहिये।

अग्रवाल के 18 गोत्र एवं उनका नामकरण हममें से आधिकार्श लोगों की मान्यता है कि अग्रवालों के 18 या साढ़े सत्तरह गोत्रो के नाम उनसे 18 पुत्रों के नाम से रखे गये है किन्तु वास्तविकता में गोत्रो के नाम 18 यज्ञ करवाने वाले ऋषियों के नाम से है। महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन को 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। माना जाता है कि इन 18 यज्ञों को ऋषि–मुनियों ने सम्पन्न करवाया और इन्हीं ऋषि–मुनियों के नाम पर ही अग्रवंश के गोत्रों का नामकरण हुआ । प्रथम यज्ञ के पुरोहित स्वयं गर्ग ऋषि बने, उन्होंने राजकुमार विष्णु को दीक्षित कर उन्हें गर्ग गोत्र से मंत्रित किया। इस प्रकार अग्रवाल के 18 गोत्र है यथा गर्ग, तायल, कुच्चल, गोयन, भंदेल, मंगल, मिलत, बंसल, बिंदल, कंसल, नागल, सिंघल, गोयल, तिगल, जिन्दल, धारण, मुकुल, ऐरेन।

कमरे में सज़ाटा छा गया। एयर कंडीशनर की हल्की धूरधुपहट के बीच प्रोफेसर कुमार को लगा जैसे उनकी बरसों की पहाड़, उनका स्थापिमा और उनकी ईमानदारी किसी गहरी खाई में गिर रहे हों। वे उस सच के बोझ तले दब रहे थे जिसे कोई देखना ही नहीं चाहता था। उन्हें घर में बैठी अपनी बीमार माँ, छोटे बच्चों की स्कूल फीस और उस दूरदराज के कस्बे का खौनका ख्याल आया जहां तबादले की धमकी दी गई थी। प्रोफेसर कुमार ने गहरी सांस ली। उनका गला सूख चुका है। “सर... मुझे पॉच मिनट दीजिए मैं अभी आता हूँ,” प्रोफेसर कुमार ने धीमी, टूटी हुई आवाज में कहा। वे रजिस्टर उठाकर बाहर आए। स्टाफरूम का कोना खाली था। प्रोफेसर कुमार ने अपनी जेब से वही नीली स्याही वाला पेन निकाला जिससे वे ईमानदारी की लकीरें खींचा करते थे। हाथ कांप रहे थे, लेकिन कलम तेजी से चलने लगी। फेने दर फेने, खाली खालों में एक लय के साथ अंकित होता चलता गया जो छात्र महीनों से शकल तक नहीं दिखाए थे, वे भी कागजों पर सच कक्ष में ज़िंदा हो गए। दस मिनट बाद प्रोफेसर कुमार

–**डॉ. जे. के. गर्ग, पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर**

सत्यमेव बायोमेट्रिक जयते

कमरे में सज़ाटा छा गया। एयर कंडीशनर की हल्की धूरधुपहट के बीच प्रोफेसर कुमार को लगा जैसे उनकी बरसों की पहाड़, उनका स्थापिमा और उनकी ईमानदारी किसी गहरी खाई में गिर रहे हों। वे उस सच के बोझ तले दब रहे थे जिसे कोई देखना ही नहीं चाहता था। उन्हें घर में बैठी अपनी बीमार माँ, छोटे बच्चों की स्कूल फीस और उस दूरदराज के कस्बे का खौनका ख्याल आया जहां तबादले की धमकी दी गई थी। प्रोफेसर कुमार ने गहरी सांस ली। उनका गला सूख चुका है। “सर... मुझे पॉच मिनट दीजिए मैं अभी आता हूँ,” प्रोफेसर कुमार ने धीमी, टूटी हुई आवाज में कहा। वे रजिस्टर उठाकर बाहर आए। स्टाफरूम का कोना खाली था। प्रोफेसर कुमार ने अपनी जेब से वही नीली स्याही वाला पेन निकाला जिससे वे ईमानदारी की लकीरें खींचा करते थे। हाथ कांप रहे थे, लेकिन कलम तेजी से चलने लगी। फेने दर फेने, खाली खालों में एक लय के साथ अंकित होता चलता गया जो छात्र महीनों से शकल तक नहीं दिखाए थे, वे भी कागजों पर सच कक्ष में ज़िंदा हो गए। दस मिनट बाद प्रोफेसर कुमार

कमरे में सज़ाटा छा गया। एयर कंडीशनर की हल्की धूरधुपहट के बीच प्रोफेसर कुमार को लगा जैसे उनकी बरसों की पहाड़, उनका स्थापिमा और उनकी ईमानदारी किसी गहरी खाई में गिर रहे हों। वे उस सच के बोझ तले दब रहे थे जिसे कोई देखना ही नहीं चाहता था। उन्हें घर में बैठी अपनी बीमार माँ, छोटे बच्चों की स्कूल फीस और उस दूरदराज के कस्बे का खौनका ख्याल आया जहां तबादले की धमकी दी गई थी। प्रोफेसर कुमार ने गहरी सांस ली। उनका गला सूख चुका है। “सर... मुझे पॉच मिनट दीजिए मैं अभी आता हूँ,” प्रोफेसर कुमार ने धीमी, टूटी हुई आवाज में कहा। वे रजिस्टर उठाकर बाहर आए। स्टाफरूम का कोना खाली था। प्रोफेसर कुमार ने अपनी जेब से वही नीली स्याही वाला पेन निकाला जिससे वे ईमानदारी की लकीरें खींचा करते थे। हाथ कांप रहे थे, लेकिन कलम तेजी से चलने लगी। फेने दर फेने, खाली खालों में एक लय के साथ अंकित होता चलता गया जो छात्र महीनों से शकल तक नहीं दिखाए थे, वे भी कागजों पर सच कक्ष में ज़िंदा हो गए। दस मिनट बाद प्रोफेसर कुमार

कमरे में सज़ाटा छा गया। एयर कंडीशनर की हल्की धूरधुपहट के बीच प्रोफेसर कुमार को लगा जैसे उनकी बरसों की पहाड़, उनका स्थापिमा और उनकी ईमानदारी किसी गहरी खाई में गिर रहे हों। वे उस सच के बोझ तले दब रहे थे जिसे कोई देखना ही नहीं चाहता था। उन्हें घर में बैठी अपनी बीमार माँ, छोटे बच्चों की स्कूल फीस और उस दूरदराज के कस्बे का खौनका ख्याल आया जहां तबादले की धमकी दी गई थी। प्रोफेसर कुमार ने गहरी सांस ली। उनका गला सूख चुका है। “सर... मुझे पॉच मिनट दीजिए मैं अभी आता हूँ,” प्रोफेसर कुमार ने धीमी, टूटी हुई आवाज में कहा। वे रजिस्टर उठाकर बाहर आए। स्टाफरूम का कोना खाली था। प्रोफेसर कुमार ने अपनी जेब से वही नीली स्याही वाला पेन निकाला जिससे वे ईमानदारी की लकीरें खींचा करते थे। हाथ कांप रहे थे, लेकिन कलम तेजी से चलने लगी। फेने दर फेने, खाली खालों में एक लय के साथ अंकित होता चलता गया जो छात्र महीनों से शकल तक नहीं दिखाए थे, वे भी कागजों पर सच कक्ष में ज़िंदा हो गए। दस मिनट बाद प्रोफेसर कुमार

कमरे में सज़ाटा छा गया। एयर कंडीशनर की हल्की धूरधुपहट के बीच प्रोफेसर कुमार को लगा जैसे उनकी बरसों की पहाड़, उनका स्थापिमा और उनकी ईमानदारी किसी गहरी खाई में गिर रहे हों। वे उस सच के बोझ तले दब रहे थे जिसे कोई देखना ही नहीं चाहता था। उन्हें घर में बैठी अपनी बीमार माँ, छोटे बच्चों की स्कूल फीस और उस दूरदराज के कस्बे का खौनका ख्याल आया जहां तबादले की धमकी दी गई थी। प्रोफेसर कुमार ने गहरी सांस ली। उनका गला सूख चुका है। “सर... मुझे पॉच मिनट दीजिए मैं अभी आता हूँ,” प्रोफेसर कुमार ने धीमी, टूटी हुई आवाज में कहा। वे रजिस्टर उठाकर बाहर आए। स्टाफरूम का कोना खाली था। प्रोफेसर कुमार ने अपनी जेब से वही नीली स्याही वाला पेन निकाला जिससे वे ईमानदारी की लकीरें खींचा करते थे। हाथ कांप रहे थे, लेकिन कलम तेजी से चलने लगी। फेने दर फेने, खाली खालों में एक लय के साथ अंकित होता चलता गया जो छात्र महीनों से शकल तक नहीं दिखाए थे, वे भी कागजों पर सच कक्ष में ज़िंदा हो गए। दस मिनट बाद प्रोफेसर कुमार

कमरे में सज़ाटा छा गया। एयर कंडीशनर की हल्की धूरधुपहट के बीच प्रोफेसर कुमार को लगा जैसे उनकी बरसों की पहाड़, उनका स्थापिमा और उनकी ईमानदारी किसी गहरी खाई में गिर रहे हों। वे उस सच के बोझ तले दब रहे थे जिसे कोई देखना ही नहीं चाहता था। उन्हें घर में बैठी अपनी बीमार माँ, छोटे बच्चों की स्कूल फीस और उस दूरदराज के कस्बे का खौनका ख्याल आया जहां तबादले की धमकी दी गई थी। प्रोफेसर कुमार ने गहरी सांस ली। उनका गला सूख चुका है। “सर... मुझे पॉच मिनट दीजिए मैं अभी आता हूँ,” प्रोफेसर कुमार ने धीमी, टूटी हुई आवाज में कहा। वे रजिस्टर उठाकर बाहर आए। स्टाफरूम का कोना खाली था। प्रोफेसर कुमार ने अपनी जेब से वही नीली स्याही वाला पेन निकाला जिससे वे ईमानदारी की लकीरें खींचा करते थे। हाथ कांप रहे थे, लेकिन कलम तेजी से चलने लगी। फेने दर फेने, खाली खालों में एक लय के साथ अंकित होता चलता गया जो छात्र महीनों से शकल तक नहीं दिखाए थे, वे भी कागजों पर सच कक्ष में ज़िंदा हो गए। दस मिनट बाद प्रोफेसर कुमार

कमरे में सज़ाटा छा गया। एयर कंडीशनर की हल्की धूरधुपहट के बीच प्रोफेसर कुमार को लगा जैसे उनकी बरसों की पहाड़, उनका स्थापिमा और उनकी ईमानदारी किसी गहरी खाई में गिर रहे हों। वे उस सच के बोझ तले दब रहे थे जिसे कोई देखना ही नहीं चाहता था। उन्हें घर में बैठी अपनी बीमार माँ, छोटे बच्चों की स्कूल फीस और उस दूरदराज के कस्बे का खौनका ख्याल आया जहां तबादले की धमकी दी गई थी। प्रोफेसर कुमार ने गहरी सांस ली। उनका गला सूख चुका है। “सर... मुझे पॉच मिनट दीजिए मैं अभी आता हूँ,” प्रोफेसर कुमार ने धीमी, टूटी हुई आवाज में कहा। वे रजिस्टर उठाकर बाहर आए। स्टाफरूम का कोना खाली था। प्रोफेसर कुमार ने अपनी जेब से वही नीली स्याही वाला पेन निकाला जिससे वे ईमानदारी की लकीरें खींचा करते थे। हाथ कांप रहे थे, लेकिन कलम तेजी से चलने लगी। फेने दर फेने, खाली खालों में एक लय के साथ अंकित होता चलता गया जो छात्र महीनों से शकल तक नहीं दिखाए थे, वे भी कागजों पर सच कक्ष में ज़िंदा हो गए। दस मिनट बाद प्रोफेसर कुमार

कमरे में सज़ाटा छा गया। एयर कंडीशनर की हल्की धूरधुपहट के बीच प्रोफेसर कुमार को लगा जैसे उनकी बरसों की पहाड़, उनका स्थापिमा और उनकी ईमानदारी किसी गहरी खाई में गिर रहे हों। वे उस सच के बोझ तले दब रहे थे जिसे कोई देखना ही नहीं चाहता था। उन्हें घर में बैठी अपनी बीमार माँ, छोटे बच्चों की स्कूल फीस और उस दूरदराज के कस्बे का खौनका ख्याल आया जहां तबादले की धमकी दी गई थी। प्रोफेसर कुमार ने गहरी सांस ली। उनका गला सूख चुका है। “सर... मुझे पॉच मिनट दीजिए मैं अभी आता हूँ,” प्रोफेसर कुमार ने धीमी, टूटी हुई आवाज में कहा। वे रजिस्टर उठाकर बाहर आए। स्टाफरूम का कोना खाली था। प्रोफेसर कुमार ने अपनी जेब से वही नीली स्याही वाला पेन निकाला जिससे वे ईमानदारी की लकीरें खींचा करते थे। हाथ कांप रहे थे, लेकिन कलम तेजी से चलने लगी। फेने दर फेने, खाली खालों में एक लय के साथ अंकित होता चलता गया जो छात्र महीनों से शकल तक नहीं दिखाए थे, वे भी कागजों पर सच कक्ष में ज़िंदा हो गए। दस मिनट बाद प्रोफेसर कुमार

कमरे में सज़ाटा छा गया। एयर कंडीशनर की हल्की धूरधुपहट के बीच प्रोफेसर कुमार को लगा जैसे उनकी बरसों की पहाड़, उनका स्थापिमा और उनकी ईमानदारी किसी गहरी खाई में गिर रहे हों। वे उस सच के बोझ तले दब रहे थे जिसे कोई देखना ही नहीं चाहता था। उन्हें घर में बैठी अपनी बीमार माँ, छोटे बच्चों की स्कूल फीस और उस दूरदराज के कस्बे का खौनका ख्याल आया जहां तबादले की धमकी दी गई थी। प्रोफेसर कुमार ने गहरी सांस ली। उनका गला सूख चुका है। “सर... मुझे पॉच मिनट दीजिए मैं अभी आता हूँ,” प्रोफेसर कुमार ने धीमी, टूटी हुई आवाज में कहा। वे रजिस्टर उठाकर बाहर आए। स्टाफरूम का कोना खाली था। प्रोफेसर कुमार ने अपनी जेब से वही नीली स्याही वाला पेन निकाला जिससे वे ईमानदारी की लकीरें खींचा करते थे। हाथ कांप रहे थे, लेकिन कलम तेजी से चलने लगी। फेने दर फेने, खाली खालों में एक लय के साथ अंकित होता चलता गया जो छात्र महीनों से शकल तक